Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shrimad Bhagavad Gita Chapter–2 Shalok–31 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो–श्लोक इकतीस | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग

श्लोक 31

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि |
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते || 31||

सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!
अपने स्वधर्म को देखकर तुम्हें किसी प्रकार से विचलित नहीं होना चाहिए।
क्षत्रिय के लिए धर्म के अनुसार किया गया युद्ध सर्वोत्तम कर्तव्य है।
इससे बढ़कर क्षत्रिय के लिए कोई और श्रेष्ठ कार्य नहीं है।
अतः तुम्हें अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटना चाहिए।

विस्तृत व्याख्या

यह श्लोक जीवन में कर्तव्य, साहस और धर्मपालन के महत्व को स्पष्ट करता है।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को यह समझा रहे हैं कि केवल भावनाओं के आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं, बल्कि स्वधर्म के अनुसार कर्म करना ही सच्चा मार्ग है।

1. स्वधर्म का महत्व

हर व्यक्ति का जीवन में एक निश्चित कर्तव्य होता है।
अर्जुन क्षत्रिय है, इसलिए उसका स्वधर्म है — धर्म की रक्षा करना, अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना और सत्य के लिए संघर्ष करना।
कृष्ण कहते हैं कि अपने कर्तव्य को देखकर भयभीत होना उचित नहीं है।

2. धर्म के लिए किया गया युद्ध

यह युद्ध किसी निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि अधर्म के विनाश और धर्म की स्थापना के लिए है।
इस कारण यह धर्म्य युद्ध है, और ऐसा युद्ध करना क्षत्रिय के लिए पवित्र और श्रेष्ठ कर्म माना गया है।

3. कर्तव्य से विमुख होना

कर्तव्य से पीछे हटना मोह, भय और मानसिक दुर्बलता का संकेत है।
धर्म के मार्ग पर डटे रहना ही सच्चा पुरुषार्थ है।
कृष्ण अर्जुन को यह सिखा रहे हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी कर्तव्य का त्याग नहीं करना चाहिए।

4. क्षत्रिय के लिए सर्वोच्च मार्ग

धर्म के लिए युद्ध से बढ़कर क्षत्रिय के लिए कोई अन्य श्रेष्ठ मार्ग नहीं है।

यह युद्ध अर्जुन के लिए कर्तव्य पालन, आत्मसम्मान और धर्मरक्षा का प्रतीक है।

तर्क का उद्देश्य

भगवान कृष्ण अर्जुन को यह आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि दे रहे हैं कि भावनाओं में बहकर कर्तव्य का त्याग करना उचित नहीं है।
धर्म के अनुसार किया गया कर्म ही जीवन का सच्चा आधार है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक सिखाता है कि जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भूमिका को ईमानदारी और साहस के साथ निभाना चाहिए।
जब स्वधर्म की समझ दृढ़ हो जाती है, तब भय कम होता है, मन स्थिर होता है और कर्तव्य पालन सहज हो जाता है।

पदों का भावार्थ

स्वधर्मम् — अपना निर्धारित कर्तव्य
न विकम्पितुम् अर्हसि — विचलित नहीं होना चाहिए
धर्म्यात् युद्धात् — धर्म के लिए किया गया युद्ध
क्षत्रियस्य न विद्यते — क्षत्रिय के लिए इससे श्रेष्ठ कुछ नहीं

श्लोक का संदेश

हर व्यक्ति को अपने स्वधर्म पर अडिग रहना चाहिए।
धर्म की रक्षा के लिए साहसपूर्वक खड़ा होना चाहिए।
भय और मोह से ऊपर उठकर कर्तव्य का पालन करना ही सच्चा धर्म है।

Related Article

[Chapter–2 Shalok–29]

[Chapter–2 Shalok–30]

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS